

परिश्रम ही सफलता की कुंजी हैं।

CCO-2.H

चौधरी **PHOTOSTAT**

23 Jia Sarai, Near IIT, Hauz Khas  
New Delhi-16

Mobile No. : 9818909565, 9211212600



Name \_\_\_\_\_

Class \_\_\_\_\_

Address \_\_\_\_\_

**BRANCH**

B-11, Basement Complex, Near ICICI ATM,  
Dr. Mukherjee Nagar Delhi-11009

**ALL MATERIAL AVAILABLE**  
**HERE**

**Hand Written Class Notes**  
**For**

---

**GATE, NET, IES, IAS, PSUs, JAM, SSC**

**MATHS, CHY, PHY, LIFE SCI, ENV,**

**ME, EC, EE, CS, CE, ENG, ECO.**

---

**चौधरी PHOTO STAT**

**JIA SARAI NEAR IIT**

**DELHI - 110016**

**CONTACT NO: 9818909565**

"पश्चिम ही सफलता की कुंजी है"  
**चौधरी PHOTOSTAT**  
 JIA SARAI, NEW DELHI-16  
 Mob. No. 9818909565

1) स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था :-

- (a) कृषि प्रणाली एवं उसमें परिवर्तन,
- (b) कृषि का वाणिज्यीकरण
- (c) कृषि भाई नरोजी का धन विकास का सिद्धांत
- (d) गौर्विंद देव रानाडे का अव्यवस्था सिद्धांत
- (e) भारत में प्रमुख उद्योग-आदि की स्थिति

2) स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था :-

(a) उद्घारीकरण के पूर्व अर्थव्यवस्था :-

- सि. ए. न. के. कीम, गाडगील, V.K.R.B Rao का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान

(b) कृषि : भारत में अग्रिम व्यापक प्रणाली

(c) हरित क्रांति एवं कृषि क्षेत्र में बुंजी निर्माण

(d) व्यापार की संरचना, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र अर्थव्यवस्था, मध्य एवं कुटिल उद्योग

(e) राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय, स्वरूप, प्रवृत्तियाँ, क्षेत्रीय संगठन और उनमें परिवर्तन

(f) राष्ट्रीय आय एवं वितरण का निर्धारण वाले कारक, अमीरी की माप, गरीबी एवं असमानता की विद्यमान प्रवृत्ति

(g) उद्घारीकरण के पश्चात के अर्थ :-

- नया आर्थिक सुधार कार्यक्रम और कृषि, कृषि एवं उद्योग

- खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, Subsidy, धन वितरण प्रणाली

कृषि विकास पर सार्वजनिक व्यय का समाप्ति (अर्थ)

(b) नयी आर्थिक नीति एवं उद्योग, औद्योगिकीकरण, तिजीकरण, विनिवेश कार्यक्रम, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश नीति, बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भूमिका

(c) नयी आर्थिक नीति एवं व्यापार, बौद्धिक संपदा अधिकार, नई व्यापारिक नीति की विशेषताएं

(d) नई आर्थिक नीति एवं मौद्रिक प्रणाली में RBI की भूमिका

(e) भारत में आयोजन

- सांकेतिक नियोजन

- विकेंद्रीकृत नियोजन

- बाजार अर्थव्यवस्था तथा नियोजन के बीच संबंध

- 73<sup>वां</sup> 1 74<sup>वां</sup> संविधान संशोधन

(f) नयी आर्थिक नीति एवं रोजगार कार्यक्रम

- रोजगार एवं गरीबी

- आगामी मजदूरी

- रोजगार सृजन

- गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम एवं योजनाएं & MAURFONAT

(3) लोकविता:-

(अ) बाजार अर्थ में लोकविता की भूमिका

(i) सार्वजनिक राजस्व के स्रोत, सार्वजनिक व्यय और (उसका प्रभाव

सार्वजनिक के प्रमुख सिद्धांत, करारोपण, कराधान और उसके

संबंधित पक्ष, crowding out प्रभाव और गुण लेने की क्षमता

(1) Higher micro economy (उच्चतर व्यक्ति अर्थशास्त्र)

- (a) कीमत निर्धारण के Marshall's और तालरा का सिद्धांत
- (b) वैकल्पिक वितरण सिद्धांत :- Ricardo, कैंडार, कैलस्की का सिद्धांत
- (c) बाजार संरचना :-  
एकाधिकारी प्रतियोगिता, अल्पाधिकार और द्विआधिकार
- (d) आधुनिक कल्याण - के मापदंड :-  
(i) परेटी, हिक्स, सिमोन्सकी का कल्याण सिद्धांत और
- (e) A.R. Sen का सामाजिक कल्याण पर फांशुला

(1) ~~Advance macro economy~~ (उन्नत समस्त अर्थशास्त्र)

2.) Advance Macro economy (उन्नत समस्त अर्थशास्त्र)

(a) आय और

(i) classical सिद्धांत

(ii) Keynes का सिद्धांत, IS-LM का चक्र

No new classical theory

(3) मुद्रा एवं बैंकिंग क्षेत्र

(a) मुद्रा की मांग एवं आपूर्ति :-

(i) मुद्रा गुणवत्ता का सिद्धांत (बिस का सिद्धांत), Fishery का सिद्धांत,  
फीडमैन का सिद्धांत, Keynes का मुद्रा वेग सिद्धांत

(b) मुद्रा की आपूर्ति में वृद्धि बैंक की भूमिका

#### 4) अंतराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था

- (a) अंतराष्ट्रीय व्यापार की सिद्धांत
- (b) विनिमय निर्धारण और उसके सिद्धांत
- (c) विदेशी व्यापार का प्रभाव करने वाले कारक, व्यापार की शर्तें एवं प्रस्ताव बक (curve)
- (d) Production cycle (उत्पाद चक्र) और व्यापार सिद्धांत
- (e) संरक्षण के स्वरूप
- (f) Balance of Payment (भुगतान शेष)
- (g) व्यापारिक नीति और विकासशील देश
- (h) व्यापारिक गुट एवं भौतिक संय
- (i) W.T.O.

#### 5) Growth and Development (संवृद्धि और विकास)

- (a) हैरोड Model
- (b) लुइस मॉडल (श्रम आपूर्ति का असिमित सिद्धांत)
- (c) संतुलीत और असंतुलीत विकास मॉडल
- (d) कम विकसित देशों के संदर्भ में मिडरैंस और कुलनैट्स का आर्थिक विकास मॉडल
- (e) मानव ब्रंजी एवं आर्थिक संवृद्धि
- (f) आर्थिक विकास और अंतराष्ट्रीय निवेश तथा बहुराष्ट्रीय company
- (g) आर्थिक नियंत्रण और विकास -  
साधारण की बदलती भूमिका और आयोजन
- (h) Public-Private Partnership
- (i) स्तरीय विकास

संसाधनों का पूर्ण नवीनीकरण, अंतर पीढ़ी समता विकास और सतत विकास  
(n) कल्याण के संकेतक और <sup>आर्थिक विकास</sup> ~~विकास~~ मापक (आर्थिक विकास)

Books for II<sup>nd</sup> paper

फत & सुपरम, मित्रा एंड पुरी, लक्ष्मी नारायण बाबु

1<sup>st</sup> paper

1<sup>st</sup> part - <sup>M.L.</sup> अहुजा

2<sup>nd</sup> (समस्या) - K.N शर्मा या S.N. Sengupta

मुद्रा - M.L. Jhingran

लोब कि - आरिया, S.N. Lal

अंतराष्ट्रीय - लेखा & Agnew

आर्थिक विकास - S.N. Lal or M.L. Jhingran या लेखी

\* अर्थो की प्रौद्योगिकी संवर्धनार्थ (S. N. Sengupta)  
(Sundayphain sir)

\* आर्थिक शब्दकोष (बर्क & अग्रवाल)

Q. किसी भी देश के आर्थिक विकास की पहली इति कुशल मानवीय संजी का  
विश्लेषण होना ही समीक्षा सीमा

\* 18 वीं शताब्दी में भारतीय अर्थव्यवस्था / 18th Century भारत के पूर्व अर्थव्यवस्था

18th Century भारत का भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि 18th Century भारत के पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप क्या था और वह किस अवस्था में थी। 18th Century भारत के पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति का अध्ययन करने के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था की तत्कालीन विशेषताओं का अध्ययन करना होगा जिसकी विवेचना निम्न शिर्षकों के अंतर्गत की जा सकती है:-

- (i) ग्रामीण आधारित अर्थव्यवस्था या आत्म निर्भर ग्राम समुदाय
- (ii) कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था
- (iii) उन्नत व्यापार
- (iv) हस्तशील्य उद्योग

18th Century भारत के पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था ग्रामीण आधारित अर्थव्यवस्था थी और देश के 90% से अधिक जनसंख्या गांवों में निवास करती थी। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वालों को तीन श्रेणियाँ थी:-

- (i) कृषक समुदाय
- (ii) हस्तकाल
- (iii) नाई, दौबी, पटवारी, चौकीदार

उस समय ग्रामीण समुदाय के लोग वही तरह से आत्मनिर्भर थे और अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुओं का उत्पादन स्वयं करते थे। उनमें उत्पादन और वितरण प्रक्रिया में परस्पर



सहयोग और सम्बन्ध पाया जाता था। जिससे माध्यम से वस्तुओं का उत्पादन और आपूर्ति निर्वाह होती रहती थी। जिससे लोग संतुष्ट रहते थे। इन सब के आधार पर यह कहा जाता कि उस समय भारतीय अर्थव्यवस्था ग्रामीण आधारित अर्थव्यवस्था थी और ग्राम समुदाय आत्मनिर्भर था।

13<sup>th</sup> शताब्दी के पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था थी। भारतीय आबादी का दो तिहाई से लेकर तीन चौथाई आबादी अपने पितृकीपार्ष्ण के लिए प्रत्यक्षतः कृषि पर निर्भर थी। इसके साथ-साथ दूरकाल वर्ग के लोग भी खेती के अपने सहायक व्यवसाय के रूप में अपनाते थे। इस समय भारतीय कृषि उन्नत अवस्था में थी, जिसका कारण किसानों के लगन, मेहनत और पूर्व के शासकों द्वारा चलायी गयी योजनाएँ थीं। किसानों के अपनी उपजों का उचित मूल्य प्राप्त होता था जिससे किसानों का जीवन स्तर बेहतर था और वितरण प्रणाली सुव्यवस्थित होने के कारण अन्य लोगों को भी खाद्यधान या उससे जुड़ी हुई वस्तुओं की आपूर्ति नियमित एवं प्रभावपूर्ण तरीके से सम्पन्न होती थी और इसके कारण लोगों को कोई असुविधा नहीं होती थी।

13<sup>th</sup> शताब्दी के पूर्व भारत का आंतरिक व्यापार और विदेशी व्यापार दोनों ही उन्नत अवस्था में था। भारत केवल अपनी आवश्यकता के लिए ही वस्तुओं का उत्पादन नहीं करता था बल्कि निर्यात करने के लिए भी वस्तुओं का उत्पादन करता था। उस समय भारत द्वारा स्वर्ण, मसाले, लोह एवं शक्ता की वस्तुएँ, गुरुम मसाले, तन्त्राष्ट्र और हस्तविन्यायी वस्तुओं का निर्यात करते थे। पहले में भारत की सोना, चाँदी, हीरे एवं जवाहरात मिलता था। भारतीय व्यापार का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष था कि वह आउटल था अर्थात्

हमारा निर्यात अधिक था और आयात कम था।

18 वीं शताब्दी के पूर्व भारत में हस्तशिल्प उद्योग अत्यंत उन्नत अवस्था में था इसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की सम्मिलित थी परंतु ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में <sup>शहरी</sup> हस्तशिल्प उद्योग अधिक विकसित था। और भारतीय हस्तशिल्प उत्पादों की मांग काफी अधिक थी। हस्तशिल्प उद्योग के साथ-साथ भारत का लौह उद्योग भी प्राचीन काल से ही विशेषज्ञता प्राप्त था। दिल्ली का लौह स्तंभ इसका जीता-जागता उदाहरण है।

### \* औपनिवेशिक युग में भारतीय अर्थव्यवस्था

औपनिवेशिक शासन काल में भारतीय अर्थव्यवस्था का कई रूपों में औपनिवेशीक शोषण की समस्या से गुजरना पड़ा। औपनिवेशिक शासन के स्थापना के पूर्व East India Company के व्यापार के नाम पर प्रत्यक्ष छूट पाट दीया। East India Company के शासन काल में भारतीय व्यापारियों की सीधे उत्पादकों की वस्तुओं खरीदने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। उत्पादकों की नियंत्रित मूल्य पर company को अपने उत्पाद देने का आदेश था। कारिगारों को company के कर्मचारियों एवं व्यापारियों के अनिवार्य किसी अन्य का माल बेचने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। कच्चे माल पर company को एकाधिकार करके शोषण किया। Adam Smith ने अपनी पुस्तक 'Wealth of Nations' में इसे एक पक्षीय वस्तुओं का अभिगमन तथा भारत से धन प्राप्ति का छूट की सजा की। भारत में 1757 से 1772 के काल में औपनिवेशिक छूट बढ़ा जाता है। इस काल में हस्तशिल्प उद्योगों के विनाश से भारतीय अर्थव्यवस्था पूर्णरूपेण हिप्पि आधारी अर्थव्यवस्था की गई। East India Company ने बिसाल

परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।

CCO-1H

**चौधरी PHOTOSTAT**

23 Jia Sarai, Near IIT, Hauz Khas

New Delhi-16

Mobile No. : 9818909565, 9211212600



Name \_\_\_\_\_

Class \_\_\_\_\_

Address \_\_\_\_\_

**BRANCH**

B-11, Basement Complex, Near ICICI ATM,  
Dr. Mukherjee Nagar Delhi-11009

**ALL MATERIAL AVAILABLE**  
**HERE**

**Hand Written Class Notes**  
**For**

---

**GATE, NET, IES, IAS, PSUs, JAM, SSC**

**MATHS, CHY, PHY, LIFE SCI, ENV,**

**ME, EC, EE, CS, CE, ENG, ECO.**

---

**चौधरी PHOTO STAT**

**JIA SARAI NEAR IIT**

**DELHI - 110016**

**CONTACT NO: 9818909565**

## \* Economic Development and Economic Growth

①

E.D = f [ Natural<sup>res</sup>, human<sup>res</sup>, political, technical prog., Infrastructure,  
law & order, political system, social system, physical land. ]

आर्थिक विकास क्यों आवश्यक है?

- (i) राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि के लिए
- (ii) प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के लिए
- (iii) व्यक्ति के चुनाव क्षेत्र का विस्तार करने के लिए
- (iv) पूंजी निर्माण एवं निवेश की दर में वृद्धि करने के लिए
- (v) नागरिकों के आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए
- (vi) प्राकृतिक आपदाओं पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए
- (vii) रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने के लिए
- (viii) जीवन स्तर में सुधार करने के लिए
- (ix) क्षेत्रीय असंतुलन दूर करने के लिए
- (x) कानून एवं व्यवस्था को बनाए रखने के लिए
- (xi) देश की आंतरिक और बाह्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए
- (xii) वैश्विक राजनीति में अपनी पहचान को मजबूत बनाए रखने के लिए
- (xiii) कुशल मानवीय पूंजी के निर्माण के लिए

॥ परिश्रम ही सफलता की कुंजी है ॥  
**चौधरी PHOTOSTAT**  
JIA SARAI, NEW DELHI-16  
Mob. No. 9818909565

\* आर्थिक विकास के मापक या अन्वितक क्या हैं?

परंपरागत संकेतक	आधुनिक संकेतक
- सोना-चाँदी (अधिक)	- वार्षिक प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि
- राष्ट्रीय आय (अधिक)	- आर्थिक कल्याण में वृद्धि
- निर्यात अधिक	- PQLI
- प्रति व्यक्ति आय अधिक	- HDI
- साक्षरता अधिक	- PPP
- निर्यात कृषि	- लिंगित विकास (GDI)
- सामाजिक सुरक्षा अधिक	- Green GDP
- औद्योगिक विकास अधिक	- HPI
	- MPI
	- TPI
	- Social Justice

\* आर्थिक विकास के रणनीति

अल्पविकास देशों या विकासशील देशों में आर्थिक विकास के संदर्भ में अपनायी जाने वाली रणनीति के संदर्भ में विचारधारानुसार प्रचलित हैं -

- (i) संतुलित विकास नीति
- (ii) असंतुलित विकास नीति

किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए कौन सी पद्धति अपनायी जाए यह आज भी विवादोद्भूत है। कुछ विचारकों की धारणा है कि अल्प विक. देशों के विकास के लिए संतुलित पद्धति की अपनाना चाहिए। क्योंकि दूसरे वर्ग की राय में असंतुलित विकास की नीति अधिक श्रेष्ठ है। अतः इस दृष्टि से

किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पूर्व इन दोनों विधियों के बारे में साक्षरता परीक्षा जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है (2)

संतुलित विकास से आशय इस प्रक्रिया से है जब अर्थों के सभी क्षेत्रों में एवं उद्योगों का एक साथ विकास किया जाता है। संतुलित विकास शब्द का भी अलग-2 अर्थशास्त्रीयों द्वारा अलग-2 अर्थों में प्रयोग किया गया है कुछ अर्थशास्त्री निष्कर्ष इस क्षेत्रों में निवेश करने के संतुलित विकास मानते हैं जिससे कि वह अन्य क्षेत्रों की वरिष्ठता पर आ जाए। जबकि कुछ अर्थशास्त्री उद्योग और कृषि वाले क्षेत्र एवं निर्गतक क्षेत्र में संतुलन स्थापित करने के विचार के संतुलित विकास का नाम दिया है।

नियोजन के साथ संतुलित विकास का अर्थ अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों का एक ही अनुपात में विकास करने से है जिससे कि उपभोग, निवेश और आय में वृद्धि सामान्य दर से हो। संतुलित विकास से आशय अर्थों के विभिन्न क्षेत्रों में संतुलन स्थापित करने से है जैसे उत्पादन और उपभोग के बीच, उपभोग तथा पूँजीगत क्षेत्र के बीच तथा उत्पादन की शक्तियों के बीच जिससे एक तरफ कच्चे माल तथा महत्वपूर्ण वस्तुओं की दूसरी ओर औद्योगिक आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित हो सके। अतः यह कहा जा सकता है कि संतुलित विकास का अर्थ अर्थव्यवस्था के समस्त क्षेत्रों तथा उद्योगों का एक साथ विकास करने से है जिससे कि विभिन्न क्षेत्रों की उपज के लिए तैयार बाजार मिल सके और असंतुलन उत्पन्न न हो पाए।

## \* असंतुलित विकास की नीति :-

विकास की दूसरी विचारधारा असंतुलित विकास की है असंतुलित विकास का अर्थ किसी 'अर्थ' के सभी क्षेत्रों का एक साथ विकास न करके कुछ-कुछ हुए प्रमुख क्षेत्रों का गहन विकास करना है इस पद्धति के प्रस्तावों का तर्क है कि अल्पविकसित देशों के पास ऐसी एवं अन्य आवश्यक संसाधन इतनी मात्रा में नहीं उपलब्ध होते हैं कि सभी क्षेत्रों में एक साथ निवेश किया जा सके इसके अतिरिक्त उपलब्ध सीमित संसाधनों का सभी क्षेत्रों में सामान्य वितरण करना न केवल अकार्पिक सिद्ध होगा बल्कि विकास की दर कम विनियोग से उच्च भी हो सकती है और यह बहुत कम हो सकती है यही कारण है कि ऐसे देशों में कुछ-कुछ हुए महत्वपूर्ण क्षेत्रों या उद्योगों में बड़ी मात्रा में निवेश करके विकास की गति को तीव्र की जा सकती है और उससे उत्पन्न होने वाली वस्तुओं में होने वाली वृद्धि से अन्य क्षेत्रों का भी सामर्थ्य <sup>विकास</sup> (growth) होने लगता है

असंतुलित विकास नीति के प्रमुख समर्थक 'Harbman' हैं उनका कहना है कि विकास की प्रारंभिक अवस्था में निवेश ऐसे क्षेत्रों में केंद्रित किया जाना चाहिए जो आगे चलकर विकास की दर को वर्धन में मद्दगार बन सके। उच्च आर्थिक विकास असंतुलन का जन्म देता है और यह असंतुलनों की श्रृंखला के द्वारा उत्पन्न भी होता है अतः स्व पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार अर्थ की जान-बूझ कर असंतुलित किया जाना



आर्थिक विकास का सबसे अच्छा तरीका है।

(3)

आर्थिक विकास की दोनों पद्धतियों के अपने-2 गुण  
हैं - दीख हैं। अतः - यह कहना बहुत ही कठिन है कि कौन सी  
पद्धति ज़ैल है। विकास की दोनों पद्धतियों का अंतिम लक्ष्य आर्थिक  
विकास करना है। अंतर दोनों में केवल विकास की प्रक्रियाएँ हैं।  
विकासवादी अर्थशास्त्र का यह इतिहास बताता है कि अमेरिका और ब्रिटेन  
संतुलित विकास की नीति का अपनाकर आगे बढ़े जबकि  
सोवियत रूस में असंतुलित विकास की नीति का अपनाया।  
कौन से विधि ज़ैल है इस संबंध में प्रो० पाल स्ट्रीटन का कथन है  
कि संतुलित विकास और असंतुलित विकास के बीच - फ़र्क संबंधी  
विवाद उत्पन्न करना निःसंदेह एक मिश्रित विचार है। यह दोनों  
पद्धतियाँ ही अर्थों में प्रतिद्वंद्वी न होकर पूरक हैं। इस तरह  
दोनों पद्धतियों में फ़र्क करने की अपेक्षा इनके सम्मिश्रित उपयोग  
की चर्चा करना अधिक ज़ैलकर होगा। फिर भी अस्पष्टीकृत  
देशों की मूल धारणा का देखते हुए यह कहा जा सकता है कि  
अस्पष्टीकृत देश पहले अस्पष्टीकृत असंतुलित विकास की नीति  
अपनाकर विकास के लिए आवश्यक उपकरण जुटाएँ और उसके  
उपरांत संतुलित विकास की नीति अपना सकते हैं। इस संबंध  
में प्रो० भायर का कथन है कि जब विकास रत देश  
असंतुलित के नहीं चर सकत। भले ही वह इसे पसंद करे  
या न करे तो फिर जान - बूझकर असंतुलित पैदा करना  
तथा असंतुलित विकास की नीति का अपनाना ही  
अच्छा होगा। जिससे तीव्र विकास की संभावना अधिक  
है।

## \* भारत में आर्थिक विकास की कुछ रचना

जहाँ तक भारत में आर्थिक विकास की रणनीति की अपनाने का प्रश्न है, वहाँ इस बात पर भी ध्यान देना आवश्यक है कि भारतीय अर्थ की प्रकृति विकासशील अर्थ है और यहाँ विकास हेतु मिश्रित अर्थ की <sup>प्रणाली</sup> अपनाया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त भारत में आर्थिक नियोजन के माध्यम से विकास की गति प्रदान करने का प्रयास किया गया। यदि हम विभिन्न योजनाओं में अपनायी गयी नीतियों पर ध्यान दें तो तब स्पष्ट होता है कि भारत नियोजन प्रक्रिया के अंतर्गत विभिन्न योजनाओं में संतुलित, असंतुलित और प्रबल प्रयास <sup>(Heavy Investment)</sup> स्वीकृत की रणनीति की ही अपनाया।

1991 से लेकर 1992 के दौरान सरकार ने कमी बूझी तो कमी उद्योग के बीच अपनी प्राथमिकताओं का निर्धारण किया और इनके बीच संतुलन और असंतुलन उत्पन्न करने पर बल देती रही और इनके माध्यम से विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाती रही यद्यपि सरकार ने संतुलित रूप संतुलित विकास की नीति की ही अपनाया था परंतु सरकार अपनी क्षमताओं के देखते हुए असंतुलित विकास की प्रक्रिया को व्यवहारिक रूप दिया। देश में आर्थिक उदारीकरण की नीति लागू होने के बाद सरकार ने अल्पविवेक निवेश की नीति अपनाने के अन्तर्गत में नीच निवेश और विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने की रणनीति अपनायी और इस दिशा में पिछले दशकों में निवेश करने की नीति

Green field Investment की Policy अपनायी गयी

जिससे कि अग्रिम 1/5 पिछड़ा क्षेत्रों का विकास समान हो सके।  
(विशेष)

(11)

वर्तमान में भी सरकार समतामूलक विकास की अवधारणा का आत्मसात (अपनायी) हुयी है परंतु सरकार की नीति व्यवहारिक तौर पर असंतुलन की ही है और सरकार असंतुलों को क्रौडला उत्पन्न करके संतुलित विकास के लक्ष्य को पाना चाहती है और इस दिशा में समावेशी विकास की रणनीति अपना रही है।

\* आर्थिक विकास में बौद्धिक पूंजी की भूमिका:

किसी भी देश का आर्थिक विकास उसके कार्य कुशलता, शिक्षित एवं प्रशिक्षित श्रम शक्ति पर निर्भर करता है। आर्थिक विकास एक यांत्रिक क्रिया मात्र ही नहीं बल्कि अंतिम रूप से यह मानवीय उपक्रम है। अन्य मानवीय उपक्रमों की भाँति इसका परिणाम सही कार्य में इसकी संचालित करने वाले जन-समुदायों की कुशलता, गुरुता, एवं प्रवृत्तियों पर निर्भर करता है यदि किसी देश की जनसंख्या उसके आर्थिक विकास के आवश्यकताओं के अनुरूप है और उसके निवासी विवेकशील, परिश्रमी, शिक्षित एवं कार्य कुशल हैं तो निःसंदेह अन्य बातों के रहने पर उस देश का आर्थिक विकास अधिक होगा।

आर्थिक विकास की दृष्टि से मानवीय पूंजी की अपेक्षा

मानवीय पूंजी अधिक श्रेष्ठतर मानी जाती है क्योंकि मानवीय संसाधनों की कुशलता एवं दक्षता पर भी आर्थिक विकास का बड़ा खड़ा किया जा सकता है। यदि किसी देश के पास पर्याप्त एवं श्रेष्ठतर मानवीय पूंजी उपलब्ध है तो उस देश की मानवीय पूंजी और भी अधिक उत्पादक बन जाती है क्योंकि बेरोजगार मानव पूंजी का अभाव है तथा मानवीय पूंजी का लाभ पूर्ण उपयोग नहीं हो सकता है क्योंकि रोजगार हाता में

चलती हुयी मशीनों राकने लगती हैं उपकरण समय के पूर्व बिल्कुल  
 लगते हैं, उपज की किस्म एवं उत्पादकता का स्तर कम हो जाता है  
 प्राथमिकी ज्ञान तथा कुशलता, समाज की अगतिवु उपकरण तथा  
 अर्द्ध संपत्ति हो जिससे बिना मोतिवु ड्रेजी उत्पादकता का प्रयोग  
 में नहीं लायी जा सकती है। अल्प विकसित देशों में व्यक्ति  
 पद्धि के लिए उन्नतशी मानव ड्रेजी में निवेश की जाती है यदि  
 ऐसी अर्थव्यवस्थाएँ शिक्षा तथा तकनीकी ज्ञान पर प्रसार नहीं करती  
 हैं तथा लोगों की कुशलता स्तर नहीं बढ़ाती हैं तो मोतिवु  
 ड्रेजी की उत्पादकता घट जाती है। आर्थिक पिछड़ापन दूर करने  
 और प्रगति क्षमताएँ एवं प्रोत्साहन उत्पन्न करने के लिए यह  
 आवश्यक है कि लोगों के ज्ञान एवं कुशलता में वृद्धि  
 की जाए। वास्तव में मानवीय संसाधनों के गुण में सुधार  
 किए बिना अल्प विकसित देश में किसी भी प्रकार का सकारात्मक  
 परिवर्तन संभव नहीं है। और मानवीय ड्रेजी के विकास के लिए  
 शिक्षा का विकास किया जाना आवश्यक है शिक्षा की आवंटित  
 किए गए साधन उत्पादकीय क्षमता को बढ़ाने में सहायक  
 होते हैं अतः शिक्षा तथा अन्य आधार संरचना निवेश <sup>आवश्यक</sup>  
 अंग हैं।

प्रोड मिश्रण का क्या है कि बहुत बड़ा <sup>जन्म</sup> <sup>संख्या</sup> को निरस्त  
 छोड़कर राष्ट्रीय विकास कार्यक्रम शुरू करने की बात मुझे  
 निरर्थक मान्य पड़ती है। आर्थिक विकास के लिए श्रम  
 का गुण हो अधिक महत्वपूर्ण है ऐसा नहीं है यदि  
 अकुशल श्रमिक अधिक देर तक अवकाश करते हैं तो उसकी  
 प्रति व्यक्ति आय कम हो होगी। निरस्त तथा अशिक्षित  
 व्यक्तियों से यह आशा नहीं की जा सकती है कि वे